पुरुषोत्तम संगमयुग और राजयोग द्वारा अनुसंधान

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

पिछले लेख में मैंने लिखा था कि एक प्रसिद्ध हठयोगी ने हठयोग और चर्मरोग, हठयोग और कैंसर, हठयोग और हृदयरोग आदि अनेक प्रकार की सी.डी. बनाई हैं। मैंने सुझाव रखा था कि राजयोग के क्षेत्र में भी हमें अनुसंधान करके विभिन्न विषयों पर सी.डी. बनानी चाहिएँ। कइयों ने इस विषय पर विस्तृत रूप से लिखने का अनुरोध मुझसे किया है।

परमपिता शिव परमात्मा ने हम बच्चों को कहा है कि अब ईश्वरीय सेवा में नया मोड़ लाने की ज़रूरत है। ईश्वरीय संदेश देने की सेवा हम सबने काफ़ी कर ली है। प्रदर्शनी, टी.वी., कॉन्फ्रेंस आदि के द्वारा देश या विदेश में शिव बाबा का संदेश काफी लोगों को मिला है। अभी ईश्वरीय अनुभव कराने की श्रीमत हमको मिली है इसलिए इस वर्ष का मुख्य उद्देश्य है, परमात्मा की शक्तियों का अनुभव सबको कराना।

पिछले वर्ष की अव्यक्त मुरलियों में श्रीमत मिली कि अभी क्वान्टिटी के बदले क्वालिटी की और माइक तथा वारिस क्वालिटी के निर्माण की भी सेवा करनी है। इसके लिए ईश्वरीय सेवा के साधन और साधना में नवीनता लानी पड़ेगी। जैसे मिष्ठान्न में लड्डू बनाने का अलग साधन और मालपूआ बनाने का अलग साधन होता है। डॉक्टर के पास भी साधनों में भिन्नता होती है। आँख के डॉक्टर के पास जो साधन होते हैं उससे भिन्न प्रकार के साधन कान और गले के डॉक्टर के पास होते हैं। उसी प्रकार हमें भी ईश्वरीय सेवा के साधनों में भिन्नता और नवीनता लानी पड़ेगी।

जैसे-जैसे विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति हुई है, उसी तरह लोगों की विचारधारा और ज़रूरतों में भी बदलाव आया है। पहले समाचार पढ़ने के लिए अखबार लेने पड़ते थे और अब टी.वी. के द्वारा किसी भी घटना का समाचार देश-विदेश में तुरंत पहुँच जाता है। हम को जर्मनी में बताया गया था कि भूतकाल में रोम का बादशाह समाचार तुरंत प्राप्त करने के लिए प्रत्येक पाँच-सात किलोमीटर के बाद टावर बनवाता था जिसमें संदेशवाहक व्यक्ति आकर रह सकता था। उन दिनों फ्रेंकफर्ट से रोम तक समाचार भेजने के लिए कम से कम 48 घंटे लगते थे। एक घोड़ेसवार संदेशवाहक एक टावर से दूसरे टावर तक जाता और दूसरा संदेशवाहक उसी समाचार को लेकर फिर तीसरे टावर तक जाता। इस प्रकार संदेश पहुँचाये जाते थे लेकिन आज रेडियो, टी.वी., ई-मेल द्वारा सबको संदेश फौरन मिल जाते हैं।

अभी हमको भी ईश्वरीय ज्ञान द्वारा मिले हुए रत्न दुनिया के सामने प्रस्तुत करने हैं ताकि सभी आत्माओं का शिव बाबा के प्रति ध्यान आकर्षित हो सके। मेरा यह भी मानना है कि साकार और अव्यक्त मुरलियों पर जितना विचार सागर मंथन करना चाहिए उतना हम आत्माओं ने नहीं किया है। एक ज़माने में दिल्ली के राजौरी गार्डन सेवाकेन्द्र पर ब्रह्माकुमारी सुदेश बहन ने, 'परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है', इसकी फोटोकॉपी की रीति से एक किताब बनाई थी। एक कॉपी मुझे भी मिली थी, उसमें 147 प्वाइंटस थे जिनके आधार पर हम सिद्ध कर सकते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। प्रस्तावना में वहाँ के बहन-भाइयों ने लिखा था कि ये सब प्वाइंटस हमें मुरलियों से ही मिले हैं। ऐसे ही महापरिवर्तन की सूचना, अशरीरी बनने की युक्तियाँ आदि-आदि विषयों पर स्पार्क के बहन-भाइयों ने तथा राजू भाई ने बहुत-सी प्वाइंटस मुरलियों से निकाली हैं जो मक्खन के रूप में सबको मिल जाती हैं।

आज के मेडिकल साइंस ने सिद्ध किया है कि 80 प्रतिशत रोग मन के द्वारा शरीर में प्रवेश करते हैं जिन्हें

अंग्रेजी में साइकोसोमेटिक डिजीज (Psycho-somatic disease) कहते हैं। शास्त्रों में एक कहानी है कि कलियुग को सृष्टि में प्रवेश करना था परन्तु तीन साल तक वह चक्कर ही लगाता रहा क्योंकि कोई भी व्यक्ति गलती नहीं करता था। एक बार राजा नल ने मूत्र विसर्जन के बाद हाथ नहीं धोये और कलियुग, नल राजा के माध्यम से इस सृष्टि में प्रवेश कर गया। ऐसे ही सभी रोग मानसिक कमज़ोरियों के कारण हमारे शरीर में आ जाते हैं। राजयोग मानसिक समस्याएँ दूर करने में सर्वश्रेष्ठ साधन है। जैसे उस प्रसिद्ध हठयोगी ने कैंसर और मधुमेह रोग से बचाव के लिए सी.डी. बनाई वैसे हम भी 'राजयोग और क्रोध', 'राजयोग और मोहजीत', 'राजयोग और अहंकार', 'राजयोग से लोभ को कैसे जीतें', 'राजयोग के द्वारा शांति की प्राप्ति' आदि विषयों पर बनायें। डॉक्टर भ्राता गिरीश पटेल 'स्वास्थ्य आपकी मुट्ठी में' इस सुंदर शीर्षक से सब जगह कार्यक्रम करते हैं ऐसे हम भी ध्यानाकर्षक शीर्षक बनाकर सी.डी., कैसेट बनाएं। क्रोध रूपी अग्नि से बचने के लिए साकार और अव्यक्त मुरलियों में बहुत खज़ाना भरा है।

एक बार एक माता ने साकार ब्रह्मा बाबा को कहा कि बाबा, बच्चे तूफान करते हैं तो हमें बच्चों के ऊपर क्रोध करना ही पड़ता है और चमाट लगानी ही पड़ती है, हम तो ऐसा कल्याण के लिए ही करते हैं। तब साकार बाबा ने कहा, क्रोध एक विकार है और आदि-मध्य-अंत दुख देने वाला है। जब तक तुम्हें इस बात का विश्वास न हो जाए तब तक तुम्हारा क्रोध दूर नहीं होगा। निर्मलशांता दादी बताती हैं कि ब्रह्मा बाबा हीरे के ज़ेवर बनाकर, चौबीस घंटे के लिए हम बच्चों को पहनाते थे। हम बच्चे शरारत करते थे और कहते थे कि हम ज़ेवर वापस नहीं देंगे तो बाबा क्रोध नहीं करते थे लेकिन युक्ति से कहते थे कि नया ज़ेवर मैं तुम्हें नहीं पहनाऊँगा, पुराने को ही अपने पास रखो। तब हम बच्चे समझते थे, अच्छा, आज नया ज़ेवर बनने वाला है तो पुराना दे देते थे। ब्रह्मा बाबा के स्थान पर कोई क्रोधी पिता होते तो चमाट लगाकर ज़ेवर खींच लेते।

इस प्रकार से क्रोध से मुक्ति के बारे में विभिन्न युक्तियों की सी.डी. बना सकते हैं। इसी प्रकार से मोह के बारे में भी सी.डी. बन सकती है। हमारी अंतिम परीक्षा में दो ही प्रश्न होंगे कि हम कहाँ तक नष्टोमोहा बने हैं और कहाँ तक स्मृतिर्लब्धा बने हैं। साकार बाबा ने मोह में फँसे हुए लोगों की तुलना बंदरियों के साथ की है। बंदरी मरे हुए बच्चे को सीने से चिपकाकर घूमती है। मोहजीत राजा की कहानी भी साकार बाबा ने मुरली में सुनाई है। पहले ज़माने में घर का त्याग इसलिए कराते थे ताकि मोहजीत बनें और अब तो हमें गृहस्थ व्यवहार में रहते मोहजीत बनना है। साकार बाबा ने मुरली में कहा है कि पहले ब्रह्मा बाबा को लौकिक जीवन में बहुत मोह होता था। उनके लौकिक परिवार के एक व्यक्ति ने शरीर छोड़ा तो बाबा ने मोहवश बहुत कुछ किया और उन्हीं ब्रह्मा बाबा ने, ज्ञान में आने के बाद मोह के ऊपर इतनी विजय प्राप्त कर ली कि जब दादा विश्वकिशोर ने शरीर छोड़ा तब हम सबने ब्रह्मा बाबा से कहा कि दादा विश्वकिशोर के पार्थिव शरीर को अहमदाबाद तक प्लेन से और अहमदाबाद से आबू तक कार में ले आते हैं पर बाबा ने कहा कि हमारा संबंध तो उनकी आत्मा के साथ था, न कि शरीर के साथ, इसलिए पार्थिव शरीर का अग्नि संस्कार मुम्बई में ही कर दो। तब हम सबने मिलकर ऐसा ही किया। पिछले साल आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी के निमित्त भोग के संदेशों में भी मोहजीत बनने के अनेक संदेश आये। दुनिया में लोग अशांति से व्यथित हैं उसके ऊपर भी सी.डी. बन सकती है। डिप्रेशन के बारे में भी सी.डी. बन सकती है। आज डायबिटीज़ की बीमारी भी भयानक रूप ले रही है। छठवें विकार

अर्थात् आलस्य से मुक्ति कैसे प्राप्त करें, उस पर भी हमको सी.डी. बनानी चाहिए ताकि आलस्य के बदले जीवन में चुस्ती आ जाए और सुस्ती गुम हो जाए जिसके फलस्वरूप अच्छी रीति पुरुषार्थ हो सके। प्रात: चार बजे उठने अर्थात् अमृतवेले के योग के फायदे की सी.डी. बनाकर लोगों के सामने रखें तो लोग फायदा उठा सकते हैं।

इस प्रकार कम से कम 40-50 प्रकार की सी.डी. बन सकती हैं जिनसे सभी अपने पुरुषार्थ को तेज़ कर सकते हैं। मैं इस लेख के द्वारा आदरणीया दादी जानकी जी को विनती करता हूँ कि वे क्रमवार प्रवचन करें, व्याख्यान माला के रूप में ऐसे बिन्दु (points) दें जिन्हें हमारे भाई-बहनें क्रमबद्ध करके और सी.डी. बनाकर अनुसंधान के रूप में दुनिया के सामने प्रकट करें।

यह विषय, सागर जितना बड़ा है, इस पर किताब भी लिख सकते हैं परन्तु लेख की अपनी मर्यादा होती है इसलिए सागर को गागर में लिखने का प्रयत्न किया है। दैवी भ्राता करुणा जी और उनके साथी इस कार्य में मददगार बन सकते हैं। छोटी-छोटी फिल्में भी बन सकती हैं। एक राजा ने अपने मूर्ख बच्चों को अनुभवी बनाने के लिए एक पंडित को नियुक्त किया और उसने पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर पंचतंत्र की कहानियाँ बनाईं। आज के ज़माने में मिकी माऊस के द्वारा डिज़नी ने ऐनीमेशन की कहानी बनाई है, ऐसे हम भी कहानियाँ बना सकते हैं।

एक बात फिर से दोहराना चाहता हूँ कि अभी तक ईश्वरीय सेवाओं का लक्ष्य रहा है, अधिक सेवाकेन्द्र खोलना और लोगों को संदेश देना। यह प्रवृत्ति 75% से अधिक सेवाकेन्द्रों पर चल रही है। अब इस प्रवृत्ति का परिवर्तन करें, अब क्वालिटी की आत्माएँ अर्थात् वारिस और माइक आत्माओं का आह्वान कर उन्हें दैवी परिवार में सम्मिलित करें। साधारण प्रजा बन रही है और बनती रहेगी परंतु विशेष गुण, शक्ति और विचारधारा संपन्न व्यक्तियों को दैवी परिवार में जन्म दें ताकि ईश्वरीय सेवा के रूप में मूलभूत परिवर्तन हो जाए। उम्मीद है कि मेरे ये विचार सबको पसंद आ जाएँ। हमने राजयोग से अनुभव करने की बात लिखी है तो प्रश्न उठता है कि क्या ऐसी सी.डी. से लोग अनुभव कर सकेंगे। उत्तर सहज है। दवाई क्यों लेते हैं लोग, ज़रूर रोगों को मिटाने के लिए, सिर्फ अपने घर में रखने के लिए नहीं। उसी प्रकार से 'क्रोध और राजयोग', 'मोहजीत बनना राजयोग से', 'डिप्रेशन और राजयोग' आदि सी.डी. सब लेंगे। इस प्रकार की अनुभूति भी राजयोग द्वारा करेंगे। ऐसे साधनों से अनुभव करने का पुरुषार्थ करेंगे, ऐसा मैं मानता हूँ। इस सी.डी. के अंदर उस टॉपिक के अनुसार कॉमेन्ट्री और गीत भी हों जिससे पुरुषार्थ करने की प्रेरणा मिले। जब हम वर्तमान प्रेरणा को अमल में लाते हैं तो शिव बाबा से विशेष बल मिलता है। जैसे सीज़न (ऋतु) का फल मीठा लगता है वैसे ही वर्तमान की प्रेरणाएँ ज़्यादा प्राप्ति कराती हैं। शिवबाबा ही हम बच्चों को अनुभव करने और कराने की युक्तियाँ बताते हैं और विभिन्न साधन बनाने की प्रेरणा देते हैं इसलिए वर्तमान युग की महानता का सुख लेकर ईश्वरीय सेवा में चार चाँद लगाना हम बच्चों का फर्ज़ है।

❖

इन्द्रियों के वशीभूत हुआ मनुष्य संयम में नहीं रहता। उसका मन और तन, दोनों ही मर्यादा को लांघ जाते हैं। उदाहरण के तौर पर जिस व्यक्ति में 'शब्द संयम' नहीं होगा वह वाक्-विलास के अधीन होकर हंसी-मजाक, अनाप-शनाप, अनियंत्रित रीति से ही बोलता रहेगा। किसी से दिल-लगी की बातें करेगा तो अन्य किसी की आलोचना। एक की निंदा कर बैठेगा तो दूसरे का अपमान। वह स्वादेन्द्रिय या स्वार्थ के वश होकर किसी से ईर्ष्या कर बैठेगा या तो बुरी दृष्टि के वश होकर कोई उलटा काम। इस प्रकार, वह अपने लिए कोई-न-कोई उलझन, समस्या या मामला पैदा कर लेगा जिससे कि परेशानी और तनाव हो। अत: मनुष्य को चाहिए कि वह 'कमलमुख', 'कमलनेत्र' और 'कमलहस्त' बने अर्थात् सर्वइंद्रियों को कमलतुल्य बनाये।